www.epaper.loksatya.com
राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
लोकसत्य
सत्य के संग, असत्य से जंग

मां कितनी भी बदल जाये, मां तो आखिर मां है न

सोनिया चोपड़ा

मां-बेटी के रिश्ते की समझ मुझे तब आयी, जब मैं खुद एक बच्ची की मां बनी। जब एक औरत मां बनती है तो वह संपूर्ण हो जाती है। मां और बच्चे का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों से पवित्र रिश्ता है। एक मां और पुत्री का रिश्ता तो बहुत ही खूबसूरत एवं पवित्र होता है। एक नन्ही सी परी जैसी लड़की ने हमारे घर में जन्म लिया तो मुझे खुद पर गर्व हुआ और लगा कि मैं दुनिया की सबसे खूबसूरत और भाग्यशाली हूं क्योंकि एक बेटी के रूप में मुझे लगा कि जैसे मेरा पुनर्जन्म जन्म हुआ हो। मुझे ऐसा आभास होता है और एक बेटी के रूप में मैं फिर से अपना बचपन जी रही हूं। अब मुझे मां की बातें रह-रह कर याद आती हैं, उनका झल्लाना, उल्लाहना, डांटना और अंत में प्यार से फिर से खाना खिलाना। मुझे लगता है कि स्वयं मां बने बिना मां की भावनाओं और प्यार का अहसास कर पाना कठिन है।

मां का स्थान मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मां का स्थान मेरे लिए सबसे ऊपर है। मुझे लगता है कि सबके लिए मां का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए क्योंकि एक वही है जो सारी तकलीफें सहकर भी हमें दुनिया में लाने का सौभाग्य देती है। मां चाहे कितना भी रूठ जाए, नाराज हो जाए, लेकिन वह जननी है और इस नाते उसके अधिकार भी अपार हैं। मां का रिश्ता ही ऐसा है कि वह बिना बोले ही बच्चों की सारी बात समझ लेती है। मां के रिश्ते को शब्दों में बांधना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है लेकिन एक छोटा सा प्रयास है। बड़े-बड़े विषयों पर लिखना है तो पूरी दुनिया की घटनाएं सामने आ जाती हैं लेकिन जब मां-बेटी जैसे भावुक विषय को शब्दों में उकेरने की बारी आती है तो मन में उल्लास होता है लेकिन पल भर में इस अहसास से बोझिल होने लगता है कि वह सदा तो साथ नहीं रह सकती, इसलिए कल्पना से भी इस नाजुक रिश्ते पर लिखने से डर लगता है।

मुझे बचपन की की बातें याद हैं जब मेरी बहन या दोस्तों से लड़ाई हो जाती थी तब मां समझाती थी कि लड़ाई उनसे ही होती हैं जिनसे प्यार होता है। मुझे याद है कि मां जब सुबह अपनी सरकारी नौकरी पर जाती थी, तो अपनी तैयारी करने से पहले वह हमारा खाना बनाकर हमें तैयार करती थी और फिर अपनी तैयारी में जुट जाती थी। मुझे बचपन से जुड़ी कई ऐसी बातें याद हैं कि कैसे गलती करने पर मां हमें डांटकर मारने दौड़ती थी और हम भाग खड़े होते थे और फिर थोड़ी देर बाद वह भूल जाती थी और उसी प्यार से हमारा खाना बनाती और उसी प्यार से खिलाती, मानों कुछ हुआ ही नहीं हो।

मां-बेटी के रिश्ते की समझ मुझे तब आयी, जब मैं खुद एक बच्ची की मां बनी। जब एक औरत मां बनती है तो वह संपूर्ण हो जाती है। मां और बच्चे का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों से पवित्र रिश्ता है। एक मां और पुत्री का रिश्ता तो बहुत ही खूबसूरत एवं पवित्र होता है। एक नन्ही सी परी जैसी लड़की ने हमारे घर में जन्म लिया तो मुझे खुद पर गर्व हुआ और लगा कि मैं दुनिया की सबसे खूबसूरत और भाग्यशाली हूं क्योंकि एक बेटी के रूप मे मुझे लगा कि जैसे मेरा पुनर्जन्म जन्म हुआ हो। मुझे ऐसा आभास होता है और एक बेटी के रूप में मैं फिर से अपना बचपन जी रही हूं।

अब मुझे मां की बातें रह-रह कर याद आती हैं, उनका झल्लाना, उल्लाहना, डांटना और अंत में प्यार से फिर से खाना खिलाना। मुझे लगता है कि स्वयं मां बने बिना मां की भावनाओं और प्यार का अहसास कर पाना कठिन है। मानव जीवन में संतान अनेक संभावनाओं और सपनों को जन्म देती है। जब मेरी बेटी ने चलना शुरू किया था तो मानों सपनों को पंख लग गये हों। जब वह तुतला कर बोलती थी और मैं भी तुतलाकर उसका जबाव देती, तो मुझे खिलखिलाकर हंसी छूट जाती थी और अपना बचपना याद आता था और लगता था कि मां बस अभी दफ्तर से आने वाली है और आते ही किसी मशीन की तरह काम में जुट जाएगी। फिर दूसरे ही पल अहसास होता कि यह तो पुरानी बात है और अब तो मैं स्वयं मां हूं और फिर अपनी बेटी को विहारी और उसकी मासूम मुस्कुराहट और शरारतों में अपना बचपना ढूंढने लगती और कभी-कभी ख्याल आता कि अगर मां न होती, तो यह संसार भी नहीं होता। आज मुझे अहसास होता है कि मां-बेटी का रिश्ता सब रिश्तों से अनमोल और प्यारा रिश्ता है।

मां-बेटी के रिश्ते बेहद गहरे एवं अहसास भरे होते हैं। मां को थोड़ी सी भी तकलीफ हो तो बेटी दुखी होगी और यदि बेटी को चोट लगे तो मां दर्द से कराह उठती है। मां-बेटी का रिश्ता ऐसा अटूट और विश्वास भरा होता है कि सुख-दुख के समय निजी बातों को सांझा करती हैं। मां ही बेटी की पहली शिक्षक है। बेटी को अच्छे संस्कार मां से ही मिलते हैं। मां बेटी को जिंदगी में सभी मुश्किलों से निपटना सिखाती है। आज बेटियां बेटों से बढ़कर मां-बाप के हर दुख सुख में काम आती हैं। बुढ़ापे की लाठी बनती है। इसीलिये तो किसी ने ठीक ही कहा है कि मां तो आखिर मां है न।